लोकस्मृति में मीरांबाई की छवियां

मुरली मनोहर प्रसाद सिंह

परख

पिछले अरसे में मीरां पर नये सिरे से चर्चा-परिचर्चा की शुरुआत हुई है. 'कथा' पत्रिका का मीरांबाई विशेषांक अभी तीन साल पहले प्रकाशित हुआ है. तीन वर्ष पहले ही कुमकुम संगारी की अंग्रेजी शोधकृति का हिन्दी अनुवाद *'मीरांबाई और भक्ति की आध्यात्मिक अर्थनीति'* नाम से वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया है. *'पचरंग चोला पहर सखी री'* नाम से माधव हाड़ा की पुस्तक इसी साल वाणी प्रकाशन ने प्रकाशित की है.

मीरांबाई के जीवन, समाज और काव्य कृतित्व पर केंद्रित माधव हाड़ा की पुस्तक में छह अध्याय हैं—जीवन, समाज, धर्माख्यान, कविता, कैननाइजेशन और छवि-निर्माण. इस पुस्तक में आद्यंत न तो आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहासग्रंथ में दी गई टिप्पणी की चर्चा है, न आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के मीरां संबंधी मूल्यांकन का जिक्र है, न डॉक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी, न महादेवी वर्मा, न परशुराम चतुर्वेदी, न विश्वनाथ त्रिपाठी का ही उल्लेख है. हिन्दी समालोचना में प्रस्तुत मीरांबाई की छवि का विवेचन-विश्लेषण माधव हाड़ा आवश्यक नहीं मानते, चूंकि वे हिंदी समालोचना परम्परा को पूरी तरह अस्वीकार करते हैं, बेशक मीरांबाई के प्रसंग में. संभवतः इसलिए कि वे यह मानते हैं कि हिंदी समालोचना में भी मीरां का ज्ञात और प्रचारित जीवन गढ़ा हुआ है. गढ़ने का यह काम शताब्दियों तक निरन्तर कई लोगों ने कई तरह से किया है और यह आज भी जारी है (पृ. 9). लेफ्टिनेंट कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक *एंटीक्विटीज एंड एनल्स ऑफ राजपूताना* में मीरां की छवि एक रूमानी प्रेमिका और रहस्यवादी संत भक्त कवयित्री के रूप में है माधव हाड़ा औपनिवेशिक दृष्टिकोण के उदाहरण के रूप में इसका बार-बार उल्लेख करते हैं. उनकी मान्यता है कि कालान्तर में मीरां की यही छवि चल निकली. उनके अनुसार बाद में 'इतिहासकार श्यामलदास, मुंशी देवी प्रसाद, हरिनारायण पुरोहित, ठाकुर चतुर सिंह, गौरी शंकर हीराचंद ओझा और जर्मन प्राच्यविद् हरमन गोएट्जे' आदि के प्रयत्नों के बावजूद मीरां की निर्मित छवि में रद्दोबदल की कोई पहल नहीं हुई. इस पुस्तक के लेखक माधव हाड़ा के अनुसार 'मीरां के जीवन और कविता के संबंध में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शोधकार्य विख्यात प्राच्यविद् हरिनारायण पुरोहित ने मीरां के पितृपक्ष के वंशज और इतिहासकार ठाकुर चतुर सिंह के सहयोग से किया. उन्होंने मीरां के संबंध में जो जानकारियां जुटायीं वो कमोबेश प्रामाणिक थीं लेकिन ये नये स्त्री-विमर्शकारी और वामपंथी समालोचकों की तयशुदा धारणाओं के अनुकूल नहीं थीं इसलिए दरकिनार कर दी गयीं (पृ. 11).' भक्तमालों और परिचयों में चूंकि मीरां का वर्णन एक अतिमानवीय चमत्कारी स्त्री संत-भक्त के रूप में है, अतः उसे भी वह अस्वीकार करते हैं. किंतु मीरां संबंधी लोकस्मृतियों और जनश्रुतियों के पुनः पाठ का अनुमोदन अवश्य करते हैं. लोक द्वारा गढ़े गये हर जसों का भी वे अनुमोदन करते हैं. उनकी मान्यता है कि मीरां को स्वेच्छाचार का साहस और जगह उसके समाज ने दी. इसी समाज ने मीरां

की स्मृतियों को सदियों तक संजोये रखा. माधव हाड़ा पता नहीं किन टिप्पणियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उत्साही वामपंथियों और अधिकांश नये स्त्री विमर्शकारों ने इस समाज को ठहरा हुआ और गत्यवरुद्ध मान लिया. इन्हीं संदर्भों में उन्होंने अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है :

'मीरां एक सामंत की विधवा थी, उनकी हैसियत एक जागीरदार की थी और उनके पास आर्थिक स्वावलंबन के साधन थे. वह संपन्न थीं और इतनी संपन्न थीं कि साधु-संतों को आतिथ्य-सत्कार में मुहरें देती थीं.' उनके पीहर के परिवार से संबंधित अर्थात् पितृपक्ष के वंशज और इतिहासकार गोपालसिंह मेड़तिया के इस निष्कर्ष को माधव हाड़ा पूरी तरह स्वीकार कर लेते हैं :

'महाराणा संग्राम सिंह जी ने अपनी युवराज पुत्रवधू को पुर और मांडल के परगने हाथखर्च के लिए प्रदान किये थे. इसके अतिरिक्त परम प्रतापी संग्राम सिंह जी की पुत्रवधू होने के नाते धन, रत्न, भूषणादि उनके पास भारी मात्रा में रहे होंगे. उसी संचित द्रव्य से और उक्त परगनों की आय से भगवती मीरां देवी दान-पुण्य, साधुसेवा, अतिथि-सत्कार, राजसेवक, दास-दासियों का वेतन और तीर्थयात्रा पर खर्च किया करती थी. जब कभी वह तीर्थयात्रा पर जाती थीं, हाथी-घोड़े, रथ आदि वाहन तथा अनेक राजसेवक, दास-दासियां उनके साथ चलते थे. मेड़ता नरेश की राजकुमारी और चित्तौड़ भूपाल की ज्येष्ठ पुत्रवधू के अनुरूप वह समस्त राजोचित वैभव रखती

थीं.' (जयमलवंश प्रकाश, द्वितीय भाग, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ. 421).

लगातार राजकीय अस्थिरता का माहौल और निरन्तर युद्ध में संलग्न राणा सांगा के चित्तौड़ की यह जागीर और उससे प्राप्त आय से संपन्न मीरां का राजोचित वैभव क्या वैसा ही बना रहा? सास-ननद की प्रताड़ना और मीरां के दो देवरों द्वारा दी गयी यातनाओं, विष का प्याला और सर्पदंश के प्रचलित घटनाकांडों के बावजूद क्या मीरां की कोई विवशता नहीं थी जिसके कारण उन्हें चित्तौड़, मेड़ता आदि छोड़कर वृन्दावन तथा द्वारिका जाना पड़ा. गोपालदास मेड़तिया के दावे और अनुमानों के आधार पर यह मान लेना उचित नहीं जान पड़ता कि मीरां हाथी-घोड़े-पालकी और राजसेवकों के साथ राजसी ठाठबाट का जीवन व्यतीत कर रही थीं. जिस स्त्री ने पति की मृत्यु के बाद सती होना अस्वीकार कर दिया था, जो राणा के हर आदेश की अवहेलना करती थी, साधुओं-संतों के साथ सत्संग किया करती थी और राजपरिवार के सुझावों अथवा परिपाटियों का पालन नहीं करती थी, उस स्त्री को राजसी वैभव में लिप्त सामंती स्त्री के रूप में स्वीकार करने का दावा तर्कातीत प्रतीत होता है. माधव हाड़ा तो यहां तक मानते हैं कि मेवाड़-मारवाड़ के इलाके में सती प्रथा की जघन्य परिपाटी और प्रथाएं निरपवाद रूप से सर्वव्याप्त नहीं थीं. हालांकि इसी इलाके में आज भी सैकड़ों सतीस्तंभ विभिन्न संग्रहालयों में मौजूद हैं. 'कथा' पत्रिका के मीरांबाई विशेषांक में अरविन्द तेजावत का लेख—सतीप्रथा का वीभत्स रूप एवं मीरा के संपत्ति संबंधी अधिकार' इस विवाद के प्रसंग में बहुत ही सार्थक हस्तक्षेप करता है. सती होने की बाध्यता केवल राजकुल की स्त्रियों तक सीमित नहीं थी. अरविंद तेजावत की मान्यता है कि—'मेवाड़ के महाराणा व कुंअर अपने जीवनकाल में न केवल अनेक शादियां करते थे वरन् अपनी रानियों अथवा कुंवरानियों के अलावा भी वे अनेक पासवनियों, पड़दायतों, गायणियों, खवासणों एवं डावडियों से संबंध रखते थे...सती होने के लिए पासवान को नहीं, वरन् पड़दायतों को भी बाध्य किया जाता था.' ('कथा' पत्रिका का मीरांबाई विशेषांक, मई 2012 पृ. 167-168). नारी पराधीनता के इन प्रश्नों के आलोक में मीरांबाई की स्थिति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि वह किस हद तक स्वतंत्र और निर्विघ्न स्वाधीनता का जीवन जीती थी.

हालांकि स्वयं माधव हाड़ा यह स्वीकार करते हैं कि "सांगा की मृत्यु के बाद जोधपुर के राठौड़ों का भानजा मीरां का देवर रत्नसिंह सत्तारूढ़ हुआ लेकिन सांगा के विरुद्ध षड्यंत्रकारी होने के कारण मीरां से उसके संबंध तनावपूर्ण रहे होंगे. वह बूंदी के हाड़ा सूरजमल के हाथों मारा गया. इसके बाद सत्तारूढ़ विक्रमादित्य मूर्ख और घमंडी था. उसको मीरां की गतिविधियां और आचरण अच्छा नहीं लगा. उसने मीरां को यातनाएं दीं और कई तरह से प्रताड़ित किया." (पचरंग चोला पहर सखी री, पृ. 14).

2

भक्ति आंदोलन के रचनाकारों से भिन्न मीरां के काव्य में जहां भी भक्तिप्रसंग आये हैं, उसे माधव हाड़ा एक 'युक्ति' या 'एक हथियार' मात्र मानते हैं. उनकी मान्यता है : 'सही बात तो यह है कि मध्यकालीन सामंती व्यवस्था और पितृसत्तात्मक विधि-निषेधों के अधीन अपने लैंगिक नियमन और दमन के विरुद्ध मीरां के आजीवन संघर्ष में भक्ति की भूमिका एक युक्ति या हथियार से ज्यादा नहीं है.' (पचरंग चोला पहर सखी री, पृ. 134). माधव हाड़ा की एक आपत्ति नोट करने लायक है. वह यह कि मीरां के प्रसंग में "भक्ति ही सर्वोपरि" हो गयी है, जबकि उसकी कविता में स्त्री अस्तित्व के अनुभव और संघर्ष के सभी रूप और लक्षण मौजूद हैं जो उसकी अब तक निर्मित और प्रचारित सन्त-भक्त पहचान पर भारी पड़ते हैं (वही पृ. 134). स्त्री-विमर्शकार भी मीरां के प्रसंग में यही तो कहते हैं. अचरज इस बात का है कि माधव हाड़ा के निष्कर्ष और स्त्री-विमर्शकार के निष्कर्ष लगभग एक जैसे होने के बावजूद वे आखिर किस आधार पर स्त्री विमर्शकारों की आलोचना करते हैं.

ऐसा प्रतीत होता है कि माधव हाड़ा मीरां को भक्ति आंदोलन का हिस्सा नहीं मानते हैं. वास्तविकता तो यह है कि कबीर, जायसी, सूरदास और तुलसीदास के भक्तिभाव को भी अगर एक युक्ति के रूप में देखा जायेगा तो जाहिर है कि भक्ति के आवरण को हटाकर देखने से संपूर्ण भक्तिकाव्य किसी बड़े सामाजिक अभिप्राय को सहज ही उद्घाटित करता है. भक्ति आंदोलन में भक्ति कोई इकहरी भावना या परिघटना नहीं थी. भक्ति के भीतर अनेक अंतःवर्ती धाराएं और उपधाराएं थीं. वर्णाश्रम, जात-पांत, धार्मिक कर्मकांड का खंडन, कबीर, रैदास, दरियादास आदि के काव्य में है तो आराध्य के प्रति गहरी प्रेमभावना सूफी काव्य में है. दूसरी तरफ उद्धव और गोपियों का संवाद निराकार ईश्वरभक्ति का खंडन करता है.

रामराज्य की परिकल्पना, कलजुग में मनुष्य और धर्म की दुर्गति और धार्मिक पाखंड का खंडन तुलसी के काव्य में है. संपूर्ण भक्ति आंदोलन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सामंती उत्पादन संबंधों में बदलाव की आकांक्षा की परिणति है. अतः इस पृष्ठभूमि में यह समझना कि मीरांबाई का काव्य सामंतवाद के विरुद्ध स्त्री स्वाधीनता की अभिव्यक्ति नहीं है, एक भ्रांति मात्र है. माधव हाड़ा ने स्त्री स्वाधीनता की अभिव्यक्ति के रूप में मीरां के काव्य को कुछेक महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर खास तौर पर रेखांकित किया है. उनकी विवेचना-पद्धति की परिणति इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि :

"संत भक्तों से अलग मीरां एक संसारी स्त्री थीं और उनका उठना-बैठना और संवाद अपने कुटुम्ब-कबीले और लोक समाज के साथ था. वह लोकविमुख और वीतराग स्त्री नहीं थीं—उनका जीवन राजा-प्रजा, माता-पिता, सास-ससुर, देवर-जेठ, ननद-भाभी, सखी-सहेली आदि रिश्तों के दायरे के भीतर था. इनके साथ उनके सुख-दुःख और राग-द्वेष के रिश्ते थे. उनकी कविता में इसीलिए सन्त-भक्तों से अलग इस पारिवारिक और सामाजिक

जीवन की रूढ़ दैनंदिन अभिव्यक्ति और भाषा रूपों की भरमार है." (वही, पृ. 130-131)

स्थानीयता, पारिवारिकता और लोकसमाज से संवाद के साथ-साथ मीरां के काव्य में एक निजता, एक तरह का स्वत्व और आत्माभिव्यक्ति भी मौजूद है. कुमकुम संगारी ने विस्तार से इस मुद्दे पर विचार किया है. उनका निष्कर्ष है कि—"यदि मीरां की भक्ति स्वयं को घेरे हुई लक्ष्मण-रेखा लांघ पाती है तो इसलिए कि यह 'स्व' का एक नया अर्थ पा लेती है कि—वह स्वयं निर्णय लेने के लिए अधिक स्वतंत्र है और इस प्रक्रिया में बाहरी प्रतिबंधों को भी अंतस्थ कर सकती है." (मीरांबाई और भक्ति की आध्यात्मिक अर्थनीति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 131)

3

मीरां वृन्दावन गयी थीं और द्वारिका भी गयी थीं. इन यात्राओं का संदर्भ बतलाते हुए अनेक समालोचक यह मानते हैं कि मीरां ने अपने पद ब्रजभाषा और गुजराती में भी रचे थे. आचार्य रामचंद्र शुक्ल से लेकर समकालीन समीक्षकों तक इस तथ्य को अभी तक सर्वमान्य रूप से स्वीकार नहीं किया जाता है कि मीरां की काव्यभाषा राजस्थानी की उपबोली मेड़ता और मेवाड़ की जनप्रचलित अभिव्यक्ति प्रणाली में विन्यस्त है. इसीलिए गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित मीरां की पदावली या अमर चित्रकथा अथवा डायमंड बुक्स के साथ गुलजार की फिल्म में मीरां की जो काव्यभाषा है, उसे माधव हाड़ा प्रामाणिक नहीं मानते. यह सही है कि कालक्रमानुसार मीरां की छवियां बदलती रही हैं. खास तौर पर मीरां की छवि भक्त और प्रेमदीवानी स्त्री रूप में प्रचलित हो गई है. इन छवियों को माधव हाड़ा सही नहीं मानते. उनकी स्थापना है कि आज असली मीरां अपने वास्तविक स्वरूप से बहुत दूर आ गई हैं. मीरां की कविता पर लिखे गये इस पुस्तक के चौथे अध्याय में माधव हाड़ा ने विस्तार से विचार किया है. उनका कहना है कि पारंपरिक अर्थ में मीरां संतभक्त नहीं थीं. राजसत्ता और पितृसत्ता के विरुद्ध अपने विद्रोह को उसने भक्ति के आवरण में व्यक्त किया था. *उनकी यह भी दृढ़ रूप में मान्यता है कि "मीरां एक संसारी स्त्री थी और उसके जागतिक सरोकार बहुत व्यापक, मूर्त और सघन थे. संसार विरल संतभक्तों से अलग मीरां की कविता में इसीलिए मूर्त का आग्रह बहुत है. वैयक्तिक पहचान का आग्रह और सांसारिक संबंधों का द्वन्द्व और तनाव भी संत-भक्तों की कविता में प्रायः नहीं मिलता, लेकिन मीरां की कविता में यह ध्यानाकर्षक ढंग से मौजूद है."*

भक्ति आंदोलन के पांच प्रमुख रचनाकारों में सिर्फ़ मीरां ही स्त्री कवयित्री है. उसकी अभिव्यक्ति और भाषा शैली लोकसंपृक्त और स्त्री लैंगिक है. कबीर, जायसी, सूर, तुलसी में स्वभावतः स्त्री भावना और स्त्री लैंगिकता नहीं है. इसके अतिरिक्त मीरां की काव्यभाषा अवधी, ब्रजभाषा, मैथिली और सधुक्कड़ी खड़ी बोली से भिन्न राजस्थानी की उपबोली मेड़ता और मेवाड़ की जनप्रचलित भाषा में गढ़ी-ढली है. यह भाषा पूरी तरह स्थानीय रंग में रंगी हुई है. इस भाषा-शैली और मुहावरेदानी का इस्तेमाल मेवाड़-मारवाड़ के अलावा कहीं नहीं होता. ओलूं (याद), ओलमा (उपालंभ), सगपण (संबंध), रूडा (सुंदर), रीज्या (मुग्ध), डीकरी (लड़की), डागले (छत) आदि जैसे शब्द मेवाड़ी-मारवाड़ी बोलियों के ही हैं. माधव हाड़ा मीरां के संबंध में सर्वाधिक उल्लेखनीय तथ्य यह मानते हैं कि वह *"गूढ़ आध्यात्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए भी संत-भक्तों के रूढ़ अभिव्यक्ति और भाषा-रूपों का सहारा नहीं लेती. यहां भी वह अपने स्त्रीलैंगिक और दैनंदिन जीवन की सामान्य वस्तुओं को ही सादृश्य और बिम्ब-प्रतीकों के रूप में चुनती है. उसका मुहावरा पूरी तरह स्थानीय और निजी है. कांकण (कंगन), मूंदरों (अंगूठी), घाघरो (लहंगा), दुलड़ी (दो लड़ी माला), दोवड़ो (आभूषण विशेष), अखोटा (कान का आभूषण), झूटणो (झुमका), बेसरि (नथ), चूड़ो (हाथी दांत की चूड़ियां), राखड़ी (सिर का आभूषण) आदि उसके द्वारा रोज बरते जाने वाले आभूषण और वस्त्र ही उसकी गूढ़ आध्यात्मिक अनुभूति के सादृश्य और बिम्ब-प्रतीक बनते हैं."*

माधव हाड़ा की इस पुस्तक में मीरां की कविता के जितने भी पद उद्धृत किये गये हैं, वे हरिनारायण पुरोहित द्वारा संपादित मीरां बृहत् पदावली से लिये गये हैं जो प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशित है. इसके अलावा कुछ भजनांश भी उद्धृत किये गये हैं जो पश्चिमी राजस्थान के लोक गायकों द्वारा गाये जाते हैं. मेघवाल जाति के भजनीक पद्माराम—महेशाराम के ऑडियो कैसेट *मिस्टिक लव* (कोमल कोठारी द्वारा कल्पित और निर्देशित) में ये सारे पद उपलब्ध हैं. इसे 1998 में निनाद, बम्बई ने जारी किया था.

इस पुस्तक में उद्धृत कविताओं से हिन्दी क्षेत्र के विद्वानों द्वारा संपादित मीरां पदावली-संग्रह की भाषा एकदम अलग है. मीरां के पदों को लेकर पाठभेद पर अक्सर चर्चा होती है किंतु इस चर्चा में मेवाड़-मारवाड़ की बोली के शब्दों का प्रायः ध्यान नहीं रखा गया.

मेरे विचार से हरिनारायण पुरोहित द्वारा संपादित *मीरां बृहत् पदावली* को प्रामाणिक मान लेने से भी इस प्रसंग में क्या किसी भी प्रकार के विवाद की गुंजाइश नहीं रहेगी? यह मान लेना गलत होगा कि मीरां ने ब्रजभाषा या गुजराती में कोई पदरचना की ही नहीं थी. माधव हाड़ा की इस पुस्तक की विशिष्टता इसी बात में है कि यह राजस्थान के इतिहासकारों के स्रोतों, उल्लेखों, हवालों, ख्यात बहीखातों को ही अपना उपजीव्य बनाती है. मीरां की कविता का प्रश्न हो या जीवन का प्रश्न—सभी दृष्टियों से यह पुस्तक मीरां की प्रचलित छवि को बदलने के उद्देश्य से लिखी गई एक शोधकृति जैसी प्रतीत होती है.

पुस्तक : पचरंग चोला पहर सखी री
लेखक : माधव हाड़ा
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन,
नई दिल्ली-110002
पृष्ठ : 166
मूल्य : 375 रुपये

❑